2 अप्रैल 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 1 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अप्रैल (प्रथम), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

लोनावाला स्थित अल्केश दिनेश मोदी आध्यात्मिक कैंपस में -

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

लोनावाला (महा.) : यहाँ जैन अध्यात्म स्टडी सर्किल के अध्यक्ष श्री दिनेशभाई मोदी द्वारा एक आध्यात्मिक कैंपस का निर्माण कराया गया है। इस कैंपस में उन्होंने एक जिनमंदिर का निर्माण भी किया है, इस नवनिर्मित जिनालय में एक ओर शांतिनाथ भगवान की श्वेताम्बर प्रतिमा एवं वेदी के दूसरी ओर आदिनाथ भगवान की दिगम्बर प्रतिमा विराजमान की गई है।

बीच में एक प्रतिमा पहले से ही विराजमान है; जिसे वे लोग जिनप्रतिमा कहते हैं। हमारी अनुमोदना मात्र दिगम्बर जिनप्रतिमा में ही रही है।

श्री आदिनाथ भगवान की दिगम्बर प्रतिमा का वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव दिनाँक 18 से 20 मार्च तक भक्ति और उत्साह के साथ संपन्न हुआ।

महोत्सव में आदिनाथ भगवान की प्रतिमा सरोजबेन दिनेशभाई मोदी परिवार की ओर से श्री देवश्रीभाई, बाबूभाई, मनसुखभाई और मगनभाई छेड़ा परिवार द्वारा विराजमान की गई।

कार्यक्रम के प्रथम दिन जिनेन्द्र शोभायात्रा निकाली गई। ध्वजारोहण ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री दिनेशभाई मोदी ने किया। जाप्यस्थापना व इन्द्रप्रतिष्ठा के पश्चात् आदिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया। मंडल पर मंगल कलश श्री बाबूलालजी छेड़ा परिवार की ओर से स्थापित किया गया। कार्यक्रम के दूसरे दिन यागमण्डल विधान एवं वेदी शुद्धि हेतु घटयात्रा निकाली गई। अंतिम दिन श्रीजी को वेदी पर अत्यंत भक्ति व उत्साहपूर्वक विराजमान किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव पर प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई एवं पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर ने पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर के सहयोग से संपन्न कराये।

ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व दिनाँक 15 से 17 मार्च तक इसी मंदिर में शांतिनाथ भगवान की श्वेताम्बर प्रतिमा की वेदी प्रतिष्ठा के अवसर पर भी डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का लाभ मिला।

महोत्सव में श्री दिनेशभाई मोदी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी भावना बहुत समय से एक ऐसे मंदिर का निर्माण करने की थी जहाँ दिगम्बर व श्वेताम्बर सभी साधर्मी भाई एकसाथ मिलकर अपनी-अपनी पूजन विधि से धर्माराधना कर सकें और तत्त्वचिंतन का लाभ उठा सकें। आज अपनी भावना को फलीभूत होती देखकर मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत में इस प्रकार के मंदिरों का निर्माण एक ऐतिहासिक शुरुआत है। भविष्य में इसके अनेक सुखद परिणाम प्राप्त होंगे। यह कैंपस दिगम्बर व श्वेताम्बर सभी भाईयों के लिये एक मंच पर बैठकर तत्त्वचर्चा करने का एक नया केन्द्र बनेगा, ऐसी मुझे आशा है।

इस अवसर पर श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई, श्री कमलजी बड़जात्या मुम्बई, श्री शांतिभई शाह मुम्बई, श्री उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई, श्री नितिनभाई शाह मुम्बई, ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, पण्डित महावीरजी पाटील सांगली, श्री विपुलभाई मोटानी मुम्बई, श्री दिनेशजी शास्त्री लोनावाला, श्री निर्मलजी शास्त्री पूना, श्री श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, श्री प्रवेशजी भारिल्ल करेली आदि महानुभावों के अतिरिक्त देवलाली से ब्रह्मचारी बहनों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

महोत्सव में देवलाली से 2 बस एवं मुम्बई सीमंधर जिनालय से 1 बस के अलावा मुम्बई-पूना एवं आस-पास के अनेक स्थानों से लगभग 500 साधर्मी भाई-बहनों ने लोनावाला आकर धर्मलाभ लिया।

अंतिम दिन शांतियज्ञ के दौरान पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु एक लाख पचास हजार रुपये की दानराशि भी प्राप्त हुयी।

महोत्सव में डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव (गुजराती) एवं मोक्षमार्गप्रकाशक का सार (गुजराती) सभी साधर्मियों को भेंट स्वरूप दी गई।

प्रशिक्षण शिविर में अवश्य पधारें

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में रविवार, 15 मई से बुधवार, 1 जून, 2011 तक 45 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर आयोजित होने जा रहा है।

आप सभी साधर्मी भाई-बहिनों को शिविर में लाभ लेने हेतु हमारा हार्दिक आमंत्रण है। साथ ही श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अधिक से अधिक संख्या में विद्यार्थी भेजने हेतु अनुरोध है।

आप अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर अवश्य भेजें; ताकि आवास की समुचित व्यवस्था की जा सके।

सम्पादकीय – 53

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ८४

विगत गाथा में कहा गया है कि धर्मद्रव्य अनादि–अनन्त अरूपी वस्तु है। वह जीव व पुद्गलद्रव्य में गति करने में निमित्त होती है। यद्यपि यह धर्मद्रव्य निश्चय से अखण्डित है, तथापि व्यवहार से यह असंख्यप्रदेशी है।

अब प्रस्तुत गाथा में भी धर्मद्रव्य के ही शेष स्वरूप का कथन किया है। मूल गाथा इसप्रकार है –

अगुरुलघुगेहिं सया तेहिं अणंतेहिं परिणदं णिच्चं।
गदिकिरियाजुत्ताणं कारणभूद सयमकज्जं।।८४।।

(हरिगीत)

धर्मास्तिकाय अवर्ण अरस अगंध अशब्द अस्पर्श है।
लोकव्यापक पृथुल अर अखण्ड असंख्य प्रदेश है।।८४।।

धर्मास्तिकाय द्रव्य अनन्त अगुरुलघु (अंश) रूप सदैव परिणमित होता है, नित्य है, गतिक्रिया युक्त और निमित्तरूप है तथा स्वयं अकार्य है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव टीका में कहते हैं कि इस गाथा में भी धर्मद्रव्य का ही शेष कथन है। अन्य द्रव्यों की भाँति धर्मास्तिकाय में भी अगुरुलघुत्व नाम का स्वभाव है, वह स्वभाव धर्मास्तिकाय को स्वरूप में रहने के कारणभूत है। **उस धर्मास्तिकाय के अविभाग प्रतिच्छेदों को अगुरुलघु गुण (अंश) कहा है,** जोकि प्रतिसमय होने वाली षट्स्थानपतित वृद्धि हानि वाले अनन्त हैं। उन रूप सदैव परिणमित होने से वह धर्म द्रव्य उत्पाद व्यय स्वभाव वाला है तथापि स्वरूप से च्युत नहीं होता, इस कारण नित्य है। गतिक्रिया परिणाम को उदासीन–अविनाभावी सहाय मात्र होने से गतिक्रिया में कारणभूत है। स्वयं सिद्ध होने से स्वयं अकार्य है।

कवि हीराचन्दजी कविता में कहते हैं।

(दोहा)

अगुरु–लघुक–गुन अनगिनत, तिनकरि परिनत नित्त।
गतिकारन गतिवंत कौं, आप आकारज वित्त।।३७२।।

(सवैया इकतीसा)

उतपाद नास ध्रौव्य सत्ता का सरूप सारा,
गतिकौं सहायकारी कारण विथारा है।
अस्तिरूप वस्तु तामैं जगमैं अकारज है,
धर्म–दर्वरूप ऐसा पंडित विचारा है।।३७३।।

(दोहा)

गति सहकारी गुन जहाँ, किरिया रहित परिनाम।
लोकाकास प्रमान नित, धरम दरव अभिराम।।३७४।।

उक्त पद्यों में कहा है कि धर्म द्रव्य अपने अनगिनत अगुरुलघुक अंशों रूप परिणमित होता है तथा जीव व पुद्गल द्रव्यों की गति क्रिया में हेतु है। यह अगुरुलघुत्व नामक गुण है, प्रत्येक द्रव्य में है। उसी से धर्मद्रव्य में भी समय–समय अपनी पर्याय में अनन्त अविभागी प्रतिच्छेद रूप परिणमन हुआ करता है।

इसी बात को गुरुदेव श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि प्रत्येक द्रव्य में अगुरुलघुत्व नाम का गुण है, उसी से धर्मद्रव्य में भी समय–समय अपनी पर्याय में अनन्त अविभाग प्रतिच्छेद रूप परिणमन हुआ करता है। द्रव्य टंकोत्कीर्ण अविनाशी है। जीव व पुद्गल जो अपनी योग्यता से गमन करते हैं, उनके उस गमनरूप परिणमन में धर्मद्रव्य निमित्त कारण होता है।

कारण दो प्रकार के हैं ? – १. उपादान कारण। २. निमित्त कारण। जैसे – जहाँ निश्चय होता है, वहीं व्यवहार होता है, उसीप्रकार जहाँ उपादान कारण होता है; वहीं निमित्त रूप में पर का संयोग रूप दूसरा कारण भी होता है। इसप्रकार धर्मद्रव्य का स्वरूप एवं वर्णन हुआ। ●

क्या आप चाहते हैं ?

– घर बैठे–बैठे जैन ग्रन्थों का अध्ययन करना
– उसकी विधिवत परीक्षा देकर प्रमाणपत्र प्राप्त करना

यदि हाँ तो ...

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अन्तर्गत संचालित श्री टोडरमल मुक्त विद्यापीठ द्वारा जैनदर्शन के विशारद पाठ्यक्रम कोर्स में आज ही प्रवेश लें। **फार्म मंगाने हेतु संपर्क :** प्रबंधक, टोडरमल मुक्त विद्यापीठ, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर–302015

बृहन्मुम्बई में अष्टान्हिका पर्व

मुम्बई : यहाँ फाल्गुन माह की अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनाँक 12 से 19 मार्च तक दि.जैन मुमुक्षु मण्डल बृहन्मुम्बई द्वारा विशिष्ट विद्वानों को आमंत्रित कर व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

इसके अंतर्गत **सीमंधर जिनालय जबेरी बाजार** में पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर, **दादर** में पण्डित संजयजी शास्त्री खनियांधाना, **मलाड (ई.)** में पण्डित अश्विनभाई शाह, **मलाड (एवरशाइन नगर)** में पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, **बोरिवली** में पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, **भायन्दर** में डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, **घाटकोपर** में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा एवं **दहीसर** में पण्डित सौरभजी जैन का स्थानीय समाज को लाभ मिला।

टोडरमल स्मारक भवन में प्रतिदिन होने वाले सभी प्रवचनों को आप निम्न वेबसाईट पर लाईव देख सकते हैं।
www.ustream.tv/channel/ptst

उद्घाटन समारोह संपन्न

एलोरा–औरंगाबाद (महा.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल में दिनाँक 6 फरवरी को श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य' (ग्रामीण विकास राज्य मंत्री) के करकमलों द्वारा 'श्रीमान सेठ कचरदासजी चुन्नीलालजी बाकलीवाल जैन औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र' (आई.टी.आई.) का उद्घाटन सानंद संपन्न हुआ।

समारोह के अध्यक्ष श्री सुभाषचंदजी पाटनी थे। गेस्ट हाउस एवं आई.टी.आई. ऑडिटोरियम का शिलान्यास श्री राजेशजी टोपे (मंत्री–उच्च व तंत्र शिक्षण महाराष्ट्र राज्य) द्वारा संपन्न हुआ।

इस अवसर पर संस्था की स्थापना से कार्यरत स्वतंत्रता सेनानी श्री पन्नालालजी गंगवाल (काकाजी) का शैक्षणिक कार्य में योगदान स्वरूप विविध संस्थाओं द्वारा सम्मान किया गया, साथ ही श्री प्रदीपजी जैन तथा श्री राजेशजी टोपे ने प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मान किया। अपने उद्बोधन में श्री पन्नालालजी ने संस्था के सफल संचालन के सूत्र बताये।

नेशनल लेवल पर चयन

केरल में हुई खेलकूद प्रतियोगिताओं में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जयपुर परिसर की ओर से श्री टोडरमल महाविद्यालय के 5 विद्यार्थियों को ले जाया गया, जहाँ **अजित कवटेकर** शास्त्री द्वितीय वर्ष का कबड्डी एवं बॉलीबाल में नेशनल लेवल पर चयन हुआ साथ ही इन्होंने भालाफेंक प्रतियोगिता में रजत पदक प्राप्त किया। **विपुल बोरालकर** शास्त्री द्वितीय वर्ष का भी बॉलीबाल में नेशनल लेवल पर चयन हुआ है।

जैनपथप्रदर्शक एवं महाविद्यालय परिवार आप दोनों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

अपने बालकों को जिनधर्म के संस्कार देने के लिये उन्हें दीजिये
बाल संस्कार गीत एवं जैन कहानियों के वीडियो
पारिवारिक व सामाजिक आयोजनों, संस्कार शिविरों में,
जन्मदिवस, पाठशाला आदि में वितरण के लिये सर्वोत्तम उपहार

1. जैनी बच्चे सच्चे हम
2. हम होंगे ज्ञानवान
3. वीर बनेगा बेटा
4. जिनधर्म की कहानियाँ
5. कर लो जिनवर की पूजन
6. तोता तू क्यों रोता
7. गाथा महापुराण की
8. छहढाला वीडियो
9. नन्हे मुन्ने ज्ञायक हम (धार्मिक रोचक कविताओं की पुस्तक और एनिमेशन वीडियो)
10. मुक्ति सोपान (दो धार्मिक ज्ञानवर्धक मनोरंजक गेम)
11. तीर्थंकर स्टीकर गेम

परिकल्पना और निर्देशन ह्न विराग शास्त्री (जबलपुर), देवलाली

प्रस्तुति – आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)
संपर्क – 9373294684, 9423212084
E-mail - chehaktichetna@yahoo.com

फैडरेशन की बैठक संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 12 मार्च को अ.भा.जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश द्वारा दिनाँक 29 मई से 12 जून तक निकलने वाले अहिंसा शाकाहार रथ की तैयारी हेतु बैठक संपन्न हुयी।

बैठक की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल (राष्ट्रीय मंत्री), श्री पीयूषजी शास्त्री (राष्ट्रीय संगठन मंत्री), श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री (प्रदेश अध्यक्ष) एवं श्री सर्वज्ञ भारिल्ल उपस्थित थे।

यह अहिंसा शाकाहार रथ जयपुर, उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़ इत्यादि विभिन्न जिलों से होता हुआ कोटा में विराम लेगा।

रथ प्रवर्तन का उद्देश्य –

– इस रथ के माध्यम से अहिंसा, शाकाहार व जीव दया को बढ़ावा दिया जायेगा।

– फैडरेशन की नयी शाखाएं खोलना।

– सत्साहित्य विक्रय करना।

– टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में फरवरी 2012 में आयोजित होनेवाले पंचकल्याणक महोत्सव का आमंत्रण देना।

– रथ के माध्यम से गुरुदेवश्री कानजीस्वामी, तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि विद्वानों की रीति–नीति को दर्शाना।

इस रथ के प्रमुख वक्ता श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल (राष्ट्रीय महामंत्री) एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल (राष्ट्रीय मंत्री) होंगे। इनके अतिरिक्त श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री पीयूषजी शास्त्री (राष्ट्रीय संगठन मंत्री) एवं श्री धर्मेन्द्रजी शास्त्री (राष्ट्रीय प्रचारमंत्री) भी समय–समय पर उपस्थित रहेंगे।

जैन छात्रों को अपूर्व अवसर

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ स्थित श्री नंदीश्वर विद्यापीठ का दसवां सत्र 15 जून 2011 से प्रारंभ होगा। छात्रों को लौकिक शिक्षा के साथ–साथ नैतिक एवं धार्मिक संस्कारों के बीजारोपण हेतु कक्षा 6 से 10 तक विद्यापीठ के पंचवर्षीय पाठ्यक्रम चलाया जाता है, जिसमें कक्षा 5वीं उत्तीर्ण छात्रों को दिनाँक 20 से 24 अप्रैल 2011 तक छात्र चयन शिविर में भाग लेने के पश्चात् योग्यता के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा। साथ ही पंचदिवसीय राष्ट्रीय स्तर पर बाल संस्कार शिविर का आयोजन भी किया जायेगा। बाल संस्कार शिविर में सम्मिलित होने वाले छात्रों को विद्यापीठ में प्रवेश लेना अनिवार्य नहीं है।

प्रवेशार्थी छात्र 19 अप्रैल की रात्रि तक खनियांधाना पधारें।

विशेष : योग्य वार्डन एवं शिक्षकगण भी अपनी सेवा प्रदान करने हेतु निम्न नम्बर पर संपर्क करें। – प्रमोद जैन (प्राचार्य)

मो.– 9425633457, 9977644295, 9425764479

अष्टाह्निका महापर्व सानंद संपन्न

1. देवलाली–नासिक (महा.) : यहाँ महापर्व के अवसर पर श्री पंचमेरू नन्दीश्वर मंडल विधान संपन्न हुआ।

प्रतिदिन प्रात: पूजन विधान एवं गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के पश्चात् पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रवचनसार ग्रन्थ पर एवं दोपहर एवं सायंकाल तीन लोक विषय पर विशेष कक्षा का लाभ मिला। दोपहर में ब्र. नन्हेभाई सागर द्वारा समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

विधि–विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री एवं ब्र. नन्हेभाई सागर ने संपन्न कराये।

इसके अतिरिक्त ब्र. शांताबेन की 102वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में एक गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित वक्ताओं द्वारा शांताबेन के संस्मरण एवं प्रासंगिक विचारों का लाभ उपस्थित साधर्मियों को मिला।

2. अजमेर (राज.) : यहाँ सीमंधर जिनालय में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर दिनाँक 13 से 20 मार्च तक श्री वीतराग–विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री अष्टपाहुड महामण्डल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र. श्रेणिकजी जैन जबलपुर के प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

विधि–विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. श्रेणिककुमारजी जैन, श्री मनोजजी कासलीवाल, श्री प्रकाशजी पाण्ड्या, श्री नवलजी दोसी द्वारा संपन्न हुआ।

दिनाँक 22 मार्च को पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर के नेतृत्व में 200 से अधिक यात्रियों का संघ राजस्थान भ्रमण हेतु सीमंधर जिनालय उपस्थित हुआ, जिसका श्री लुहाड़ियाजी एवं मुमुक्षु भाइयों ने भावभीना स्वागत किया। पण्डित राजेन्द्रजी के प्रवचन का भी लाभ उपस्थित साधर्मियों को मिला।

3. दिल्ली : यहाँ महापर्व के अवसर पर दिनाँक 12 से 20 मार्च तक शिवाजी पार्क स्थित श्री शांतिनाथ दि.जैन मंदिर में श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर रात्रि में पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन एवं पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि–विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन एवं श्री रमेशजी जैन इन्दौर ने संपन्न कराये।

4. जयपुर : यहाँ जौहरी बाजार मुशरफों के चौक में स्थित श्री दि. जैन मंदिर में पर्व के अवसर पर श्री कमलचन्दजी मुशरफ परिवार की ओर से इन्द्रध्वज मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित संतोषजी शास्त्री सोलापुर ने श्री विजयकुमारजी सौगाणी के सहयोग से सम्पन्न कराये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

16 से 18 अप्रैल	अहमदाबाद	महावीर जयंती और दि. जैन महासमिति (गुज.) का अधिवेशन
1 से 5 मई	देवलाली	श्री कानजीस्वामी जयंती
6 मई	चन्देरी	वेदी शिलान्यास
10 से 12 मई	मेरठ	वेदी प्रतिष्ठा
12 व 13 मई	दिल्ली	पंचकल्याणक दि.जैन परिषद
15 मई से 1 जून	जयपुर	प्रशिक्षण शिविर
3 जून से 24 जुलाई	विदेश	धर्मप्रचारार्थ (U.K.-U.S.A.)

डॉ. भारिल्ल का 2011 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 29वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन, फैक्स एवं ई.मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है –

क्र.	शहर	सम्पर्क–सूत्र	दिनांक
1.	लन्दन	**Bhimji Bhai Shah 0044-1923826135** **E-mail : bhimji@yahoo.com** **Jayanti Bhai (Gutka)** **0044-208 907 8257 (H)** **E-mail : jdgudhka@intraport.co.uk**	3 से 9 जून
2.	न्यूजर्सी	**Dr. Hemant Shah 001 2017593202** **E-mail : hemantshahmd@aol.com**	10 से 12 जून
3.	क्लीवलैण्ड	**Kushal Baid 440-339-9519** **E-mail : kushalbaid@att.net**	13 से 19 जून
4.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088** **E-mail : shahniranjan@hotmail.com** **Bipin Bhayani (O) 815-939-3190** **(R) 815-939-0056**	20 से 27 जून
5.	ह्यूस्टन	**Bhupesh Seth 281-261-4030** **713-339-3778 (O)**	28 जून से 4 जुलाई
6.	डलास	**Atul Khara 469-831-2163** **972-424-4902 insty@verizon.net**	5 से 11 जुलाई
7.	सान् फ्रांसिस्को	**Ashok Sethi (R) 408-517-0975** **E-mail : ashok_k_sethi@yahoo.com**	12 से 18 जुलाई
8.	सिंगापुर	**Ashok Patni 006596357834**	20 से 24 जुलाई

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली भी कुछ वर्षों से नियमित धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है –

23 से 27 जून – **सॉनडियागो,** 28 जून से 3 जुलाई – **ह्यूस्टन,** 4 से 11 जुलाई – **मियामी,** 12 से 17 जुलाई – **पिट्सबर्ग,** 18 से 28 जुलाई – **डलास,** 29 जुलाई से 3 अगस्त – **शिकागो**।

श्री सीमंधर एवं त्रिमूर्ति जिनालय, जयपुर के नवीनीकरण के अवसर पर

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित

श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

21 फरवरी से 27 फरवरी 2012

श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित सीमंधर एवं त्रिमूर्ति जिनालय का नवीनीकरण किया जा रहा है। इस क्रम में सीमंधर जिनालय में भगवान श्री चन्द्रप्रभ की स्फटिक रत्नमयी प्रतिमा और त्रिमूर्ति जिनालय के दाहिनी एवं बाईं ओर दो नवनिर्मित वेदियों पर भगवान नेमिनाथ एवं भगवान पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की 33 इंची वीतराग भाववाही प्रतिमा विराजमान होने जा रही हैं।

इन प्रतिमाओं की विधिपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा हेतु एक भव्य एवं आदर्श पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव मंगलवार दिनाँक 21 फरवरी से सोमवार 27 फरवरी 2012 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

लगभग 22 वर्ष पश्चात् श्री टोडरमल स्मारक भवन में पुन: आयोजित होने वाले इस महा महोत्सव में भाग लेने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

जो लोग जिस रूप में इस पंचकल्याणक में सक्रिय भाग लेना चाहते हैं और जिसप्रकार सहयोग करना चाहते हैं; वे पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से संपर्क करें।

– निवेदक –

सुशीलकुमार गोदीका डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

अध्यक्ष **महामंत्री**

एवं समस्त ट्रस्टीगण, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

71 उन्नीसवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

संवर के जो ५७ भेद हैं; उनमें तीन गुप्ति, पाँच समिति, दश धर्म, बारह भावना, बाईस परिषहजय और पाँच प्रकार के चारित्र शामिल हैं।

उक्त गुप्ति, समिति आदि ५७ भावों के संदर्भ में यह व्यवहाराभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि जीव जो भूलें करता है; उन भूलों के बारे में पण्डितजी ने जो कुछ कहा है; उसका भाव इसप्रकार है –

मन को रोकने के लिए पाप चिन्तन नहीं करते, वचन को वश में करने के लिए मौन धारण करते हैं और काय को काबू में रखने के लिए गमनादि नहीं करते – ऐसा करके ये व्यवहाराभासी स्वयं को गुप्ति धारक मानते हैं।

यद्यपि इनके मन में भक्ति आदि के अनेक विकल्प होते रहते हैं और वचन व काय की चेष्टा रोक रखी है; तथापि यह सब तो शुभप्रवृत्ति है और गुप्ति प्रवृत्तिरूप होती नहीं है। वास्तविक गुप्ति तो वीतरागभाव होने पर मन-वचन-काय की प्रवृत्ति का रुकना ही है।

वे लोग जीवरक्षा के भाव से यत्नाचाररूप प्रवृत्ति को समिति मानते हैं; किन्तु प्रश्न यह है कि हिंसा के परिणामों से पापबंध होता है और रक्षा के परिणामों से संवर मानोगे तो फिर पुण्यबंध किन भावों से होगा ?

अत: यह तो निश्चित ही है कि रक्षा के भाव समिति नहीं हैं। अति आसक्तता के अभाव में प्रमादरूप प्रवृत्ति नहीं होना ही वास्तविक समिति है।

ये व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि उत्तमक्षमादि दशधर्मों के नाम पर बंधादिक के भय से और स्वर्ग-मोक्ष के लोभ से क्रोधादि नहीं करते; किन्तु उनके अभिप्राय में क्रोधादि विद्यमान रहते हैं। **तत्त्वज्ञान के अभ्यास से जब कोई परपदार्थ इष्ट-अनिष्ट भासित न हो; और इसकारण सहज क्रोधादि भाव उत्पन्न न हों, तब सच्चा धर्म होता है।**

इसीप्रकार यह व्यवहाराभासी अनित्यादिरूप चिन्तन से शरीरादि संयोगों को बुरा जानकर, हितकारी न जानकर, उनसे उदास होने को अनुप्रेक्षा समझता है; पर यह ठीक नहीं है; क्योंकि यह उदासीनता तो द्वेषरूप है।

सच्ची अनुप्रेक्षा तो अपना व शरीरादि का जैसा स्वभाव है; वैसा ही जानकर राग-द्वेष नहीं करना, भला जानकर राग नहीं करना और बुरा जानकर द्वेष नहीं करना है।

तात्पर्य यह है कि संसार व शरीरादि से सच्ची उदासीनता के लिए वस्तु के अनित्यादि स्वभाव का चिन्तन करना ही अनुप्रेक्षा है।

इसीप्रकार यह व्यवहाराभासी भूख-प्यास आदि की प्रतिकूलता होने पर, तदर्थ कोई उपाय नहीं करने को परिषहजय समझता है।

यद्यपि कोई उपाय तो नहीं किया; तथापि अनुकूलता से सुखी और प्रतिकूलता में दुखी हुआ। दु:ख-सुखरूप परिणाम तो आर्त-रौद्रध्यान हैं। इनसे संवर कैसे हो सकता है ?

दु:ख के कारण मिलने पर भी दु:खी नहीं होना और सुख के कारण मिलने पर भी सुखी नहीं होना; सहजभाव से उन्हें जान लेना और साम्यभाव रखना ही सच्चा परिषहजय है।

यह व्यवहाराभासी जैन हिंसादि पापों के त्याग को चारित्र मानता है; इसलिए अणुव्रत-महाव्रतरूप शुभभावों को उपादेय मानता है।

इस संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी कहते हैं कि –

''तत्त्वार्थसूत्र में आस्रव पदार्थ का निरूपण करते हुए महाव्रत-अणुव्रत को भी आस्रवरूप कहा है। वे उपादेय कैसे हों ?

तथा आस्रव तो बन्ध का साधक है और चारित्र मोक्ष का साधक है; इसलिए महाव्रतादिरूप आस्रवभावों को चारित्रपना संभव नहीं होता; सकल कषायरहित जो उदासीनभाव उसी का नाम चारित्र है।[१]''

अणुव्रत-महाव्रत भी धर्म नहीं, आस्रव हैं – यह बात अच्छों-अच्छों को नहीं जमती, नहीं पचती। यह सुनकर ही लोग आन्दोलित हो उठते हैं, लड़ने-झगड़ने को तैयार हो जाते हैं। यही कारण है कि हमने अपनी ओर से कुछ भी न कहकर सीधे पण्डित टोडरमलजी को ही उद्धृत कर दिया है।

पण्डित टोडरमलजी भी इस बात को अच्छी तरह समझते थे। इसलिए उन्होंने भी सर्वमान्य समर्थ आचार्य उमास्वामी के तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) के माध्यम से बात प्रस्तुत की है।

असली चारित्र तो सम्पूर्ण कषायों रहित वीतरागभाव ही है। अणुव्रत-महाव्रत को तो वीतरागभाव के सहचारी होने से उपचार से चारित्र कहा है, व्यवहार से चारित्र कहा है।

गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परिषहजय और चारित्र – ये ऐसे विषय हैं कि इन विषयों में से प्रत्येक विषय पर एक-एक पुस्तक लिखी जा सकती है। यह बात कोरी कल्पना नहीं है। उक्त विषयों में से दशधर्म और बारह अनुप्रेक्षाओं को आधार बनाकर मैंने स्वयं पुस्तकें लिखी हैं। शेष विषयों पर भी लिखी जा सकती हैं।

पण्डित टोडरमलजी को इन विषयों पर विस्तार से लिखने का अवसर मिलता तो वे इन विषयों को हजारों पृष्ठों में भी नहीं समेट पाते।

लोग कहते हैं कि उनके अधूरे काम को मैं पूरा क्यों नहीं करता ?

अरे, भाई ! कोई किसी के काम को पूरा नहीं कर सकता। सब आदमी अपना-अपना काम करें – यही ठीक है। **(क्रमश:)**

---

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२९

शासन प्रभावना योग

– अभयकुमार जैन शास्त्री, देवलाली

इस युग में अनादि-निधन सनातन स्वानुभूति-स्वरूप मोक्षमार्ग के अन्तिम प्रणेता अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर हैं, अत: वर्तमान युग में उनका शासन कहा जाता है। इस शासन में आचार्य धरसेन, कुन्दकुन्द, समन्तभद्र, अकलंक जैसे अनेक महासमर्थ आचार्य तथा पण्डित टोडरमलजी जैसे अनेक गृहस्थ विद्वान हुये, जिन्होंने वीर-शासन को लिपिबद्ध करके शास्त्रों के रूप में सुरक्षित रखा है।

गत शताब्दी में आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने 45 वर्षों तक पुरुषार्थ प्रेरक सिंह गर्जना समान स्वानुभूति पोषक वाणी द्वारा आचार्यों तथा गृहस्थ विद्वानों द्वारा रचित ग्रन्थों का मर्मोद्घाटन करके वीर-शासन परम्परा को वर्तमान एवं आगामी पीढ़ी तक पहुँचाने में अभूतपूर्व क्रान्ति की है। आज भेद-विज्ञान, आत्मानुभूति आदि आध्यात्मिक विषयों की चर्चा करनेवाला प्राय: प्रत्येक व्यक्ति पूज्य गुरुदेवश्री से प्रत्यक्ष या परोक्षरूप से उपकृत है। अत: इस युग को पूज्य गुरुदेवश्री का शासन-प्रभावना योग कहना अनुचित नहीं है। वीर भगवान से लेकर कुन्दकुन्द और कानजीस्वामी द्वारा प्रेरित शासन प्रभावना को समग्ररूप से श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन वीर-शासन प्रभावना तथा संक्षिप्तरूप में पूज्य गुरुदेव का शासन कहा जा सकता है।

यह तथ्य सर्वविदित है कि पूज्य गुरुदेवश्री का जन्म मूल दिगम्बर जैन परम्परा में नहीं होने पर भी उन्होंने अपनी पैनी प्रज्ञा और प्रचण्ड पौरुष से सत्य का अनुसंधान करके दिगम्बर धर्म को सत्य धर्म घोषित किया। श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय में जन्मे और उसी में दीक्षित होने के कारण जहाँ एक ओर उस सम्प्रदाय द्वारा उनका तीव्र विरोध हुआ तो दूसरी ओर उसी सम्प्रदाय के हजारों साधर्मी उनकी वाणी सुनकर उनसे प्रभावित भी हुए, जिसके फलस्वरूप हजारों लोगों ने दिगम्बर धर्म स्वीकार किया और सौराष्ट्र में शताधिक दिगम्बर जिनमन्दिरों की स्थापना हुयी। दिगम्बर समाज के भी लाखों लोगों ने पूज्य गुरुदेव की वाणी के निमित्त से जिनवाणी का मर्म समझकर आध्यात्मिक केन्द्र के रूप में सैंकड़ों जिनमन्दिरों तथा स्वाध्याय भवनों की स्थापना की जिसका प्रवाह अभी भी थमा नहीं है।

पूज्य गुरुदेवश्री के स्वर्गवास के पश्चात् भी श्वेताम्बर तथा स्थानकवासी समाज के लोगों द्वारा उनके प्रवचन सुनने का तथा अन्य दिगम्बर ग्रन्थों के अध्ययन करने का प्रवाह भी अभी चालू है। अध्यात्म स्टडी सर्कल द्वारा 28 वर्षों से प्रतिवर्ष मुम्बई में आयोजित व्याख्यानमाला में हजारों लोग पूज्य गुरुदेव के अनुयायी विद्वानों के माध्यम से उनकी वाणी का मर्म सुनते समझते हैं।

देवलाली में भी कच्छी समाज के अनेक भाई-बहन न केवल प्रतिदिन पूज्य गुरुदेव के सी.डी. प्रवचन एवं स्वाध्याय में उपस्थित होते हैं, अपितु वहाँ आयोजित पूजन-विधानों में भी उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। श्री रमणीक भाई सावला के स्वाध्याय ग्रुप ने तो आगामी चार वर्षों तक आषाढ एवं कार्तिक मास की अष्टाह्निका पर्व में आयोजित विधान प्रायोजित करने की स्वीकृति दी है। अनेक भाई अपने परिवार के सदस्यों के विरोध के बावजूद भी दिगम्बर धर्म के अनुयायी बने हुये हैं। कच्छी समाज की चार बहनें तो वहाँ की दीक्षा छोड़कर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुये देवलाली में ही निवास करती हैं। इन उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि पूज्य गुरुदेवश्री का प्रभावना योग निरन्तर जीवन्त है।

हजारों श्वेताम्बर भाईयों द्वारा दिगम्बर साहित्य के अध्ययन के साथ-साथ कुछ भाइयों ने अपने समाज में ही रहकर दिगम्बर जिनबिम्ब की विधिपूर्वक स्थापना करना प्रारम्भ कर दिया है। श्रीमद् राजचन्द्र के अनुयायी अपने आध्यात्मिक केन्द्रों में दिगम्बर प्रतिमा विराजमान करने लगे हैं। ववाणिया, कोबा आदि स्थानों पर दिगम्बर प्रतिमा विराजमान है।

अभी दो वर्ष पूर्व लोनावाला से 6 कि.मी. दूर कार्ला ग्राम में अल्केश दिनेश मोदी अध्यात्म केम्पस स्थापित हुआ है, जिसमें उन्होंने जिनमन्दिर का निर्माण भी किया है। श्वताम्बर एवं दिगम्बर दोनों समाज के साधर्मी भाई वहाँ आये और उन्हें अपनी मान्यता के अनुसार जिन-दर्शन उपलब्ध हों ह्न इसी भावना से उन्होंने दोनों परम्परा की प्रतिमा विराजमान की है। वहाँ पहुँचनेवाले श्वेताम्बर और स्थानकवासी भाइयों तथा पर्यटकों को वीतरागी अन्तर्मुखी दिगम्बर जिन-प्रतिमा के दर्शन भी हों – मात्र इसी भावना से हमने दिगम्बर जिनबिम्ब की स्थापना में उनका सहयोग किया है। जिस समाज में मूर्ति ही मान्य नहीं है, वहाँ के लोग दिगम्बर प्रतिमा के दर्शन-पूजन में भी उत्साहित हो रहे हैं – यह भी पूज्य गुरुदेवश्री के निमित्त से होनेवाली आध्यात्मिक क्रान्ति का ही सुपरिणाम है।

नाना जीवा नाना कम्मा नाना लब्धि... की उक्ति के अनुसार कुछ साधर्मियों को इसमें गृहीत मिथ्यात्व के पोषण की आशंका होती है। परन्तु यह बात विचारणीय है कि दिगम्बर समाज का कोई व्यक्ति रागी-द्वेषी देवों की ओर आकर्षित हो, तब तो गृहीतमिथ्यात्व के पोषण की बात ठीक है, परन्तु गृहीतमिथ्यात्व की परम्परा के भाई यदि वीतरागी निमित्तों के प्रति आकर्षित होते हैं तो इसमें उनका गृहीतमिथ्यात्व पुष्ट होगा या कमजोर ? कुल परम्परा से विचलित कौन हो रहा है, हम या वे ? पूज्य गुरुदेवश्री की शासन प्रभावना अभी भी सैंकड़ों लोगों के गृहीतमिथ्यात्व की जड़ों पर धीरे-धीरे प्रहार कर रही है – इस तथ्य को जानकर पूज्य गुरुदेव के सभी अनुयायियों को प्रसन्न होना चाहिये तथा उनका यथासम्भव सहयोग करना चाहिये। मात्र व्यक्तिगत मतभेदों के आधार पर ऐसी बातों का विरोध करने से जाने-अनजाने पूज्य गुरुदेव के प्रभावना योग का विरोध होगा।

अभी उन भाइयों के तत्त्व-निर्णय तथा आचार-विचार में अनेक कमियाँ हो सकती हैं। ऐसी कमियाँ तो हममें भी हैं। कोई भी व्यक्ति या संस्था पूर्ण शुद्ध या निर्दोष नहीं है; परन्तु हम उनसे मैत्री भाव बनाए रखकर और उनका सहयोग करके ही उनके सुधार में निमित्त बन सकते हैं। विरोध करने से किसका लाभ होगा ?

आशा है इस दृष्टिकोण से विचार करने पर हम सबके हृदय में उन साधर्मियों के प्रति वात्सल्य भाव उत्पन्न होगा तथा उनमें दिगम्बर धर्म के यथार्थ ज्ञान और श्रद्धान प्रगट होने में हम निमित्त हो सकेंगे।

आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग सेमिनार का आयोजन

फरीदाबाद-दिल्ली : यहाँ दिनाँक 23 व 24 अप्रैल को दो दिवसीय आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग का आयोजन किया जाएगा।

इस वर्कशॉप में विभिन्न धार्मिक गेम/एक्टिविटी के माध्यम से आध्यात्मिक सिद्धांतों का भावभासन करने पर जोर दिया जाएगा। इससे अध्यात्म की सिद्धांतपरक बातों को जीवन में उतारने का औचित्य ख्याल में आएगा।

कुछ लोग आध्यात्मिक सिद्धांतों को समझते ही नहीं और कुछ बुद्धि से समझ तो लेते हैं; परन्तु जीवन का अंग नहीं बनाते; इसलिये जीवन की हर समस्या का समाधान नहीं ढूंढ पाते। आध्यात्मिक सिद्धांतों को पढ़ना अलग बात है और उनको जीवन में उतारना अलग बात है। आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग वर्कशॉप का उद्देश्य यह भावभासन कराना है कि अध्यात्म वर्तमान में भी हमारे जीवन को शांत और सुखमय बनाने में अत्यंत सक्षम है। **वर्कशॉप का स्थान - Awesome Farms & Resorts, Taksal, Faridabad-Sohana Road, Faridabad, Delhi-121004**

इसमें 13 वर्ष से अधिक आयु वाले सभी लोग सम्मिलित हो सकते हैं। इस वर्कशॉप में आने के लिए रजिस्ट्रेशन हेतु संपर्क करें - अंकुर जैन - 9899886637, 9350841701

आदिनाथ जयन्ती संपन्न

जयपुर (राज.) : अ.भा.जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र बैनाड़ में भगवान आदिनाथ जयन्ती के उपलक्ष्य में श्री सम्मेदशिखर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा मार्मिक प्रवचन हुआ और उन्होंने आदिनाथ भगवान के आदर्शों को जीवन में अपनाने को कहा। श्री कैलाशचंदजी सेठी द्वारा प्रश्नमंच का आयोजन किया गया।

संयोजन श्री संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा ने एवं आभार प्रदर्शन श्री संजयजी सेठी ने किया। **- सचिन शास्त्री**

हार्दिक बधाई !

1. कलकत्ता निवासी श्रीमती निशा एवं श्री सुशीलकुमारजी बजाज की सुपुत्री आ.रितु का विवाह दिनाँक 24 फरवरी को चि. गौतम जैन के साथ संपन्न हुआ, इस उपलक्ष्य में 1000/- रुपये की राशि प्राप्त हुयी।

2. जयपुर-जनता कॉलोनी निवासी श्री राजकुमार-दीप्ति जैन के सुपुत्र चि.रिमांशु संग सौ.राखी का 12 दिसम्बर को विवाह संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/- रुपये की राशि श्रीमती चन्द्रादेवी द्वारा प्राप्त हुयी; एतदर्थ धन्यवाद !

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

शोक समाचार

१. सोनगढ़ (गुज.) निवासी ब्र. मधुबेन मनसुखलाल जोबालिया का दिनाँक 8 मार्च को 71 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं। आपने गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समक्ष ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया था। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 1000-1000/- की राशि प्राप्त हुई।

२. नातेपुते (महा.) निवासी श्री नन्दकुमार फूलचंदजी गांधी का दिनाँक 19 मार्च को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं धर्मप्रेमी थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्री धवल गांधी के पिताजी थे। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 251-251/- की राशि प्राप्त हुई।

३. दुमदुमा-टीकमगढ़ (म.प्र.) निवासी श्रीमती सरजूदेवी जैन धर्मपत्नी स्व. पण्डित दयाचंद्रजी शास्त्री मथुरा संघ चौरासी का दिनाँक 4 मार्च को 90 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप स्वाध्यायी, सरल स्वभावी एवं धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। ज्ञातव्य है कि आप विदुषी कुसुमलता जैन हरदा की मातुश्री थीं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

आवश्यक सूचना

पाठकों को सूचित किया जाता है कि जो भी पाठकगण जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) डाक के स्थान पर ई-मेल द्वारा (पी.डी.एफ. फॉर्मेट) प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपना नाम, ई-मेल एड्रेस व एल.एम.नं ई-मेल द्वारा सूचित करें। ई-मेल द्वारा मंगाने पर जैनपथप्रदर्शक तत्काल आपके पास पहुँच जाएगा; अत: डाक के स्थान पर ई-मेल द्वारा जैनपथप्रदर्शक अवश्य मंगायें।

ई-मेल : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 28 मार्च 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127